SANATANODAYA सनातनोदय
ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकाश में भारतीय विदेश नीति : सिद्धांत और व्यवहार

अजय कुमार'

शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झालावाड़,

कोटा विश्वविद्यालय,कोटा राजस्थान।

डॉ. फूल सिंह गुर्जर''

प्रचार्या, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

झालावाड़ राजस्थान।

सारांश

श्रीमद्भागवत गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह जीवन–दर्शन, शासन–कला और नीति–निर्माण के लिए प्रेरणास्रोत है। भारतीय विदेश नीति में गीता के सिद्धांतों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। गीता के उपदेश जैसे धर्म, कर्तव्यपालन, निष्काम कर्म, वसुधैव कुटुंबकम्, संकट प्रबंधन, संतुलन और न्याय का संदेश आधुनिक भारतीय विदेश नीति के मूल सिद्धांतों में समाहित हैं। यह शोध पत्र गीता के श्लोकों और उनके व्यावहारिक दृष्टांतों के माध्यम से भारतीय विदेश नीति के नैतिक, व्यवहारिक और यथार्थवादी पहलुओं का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द – *श्रीमद्भागवत गीता, भारतीय विदेश नीति, धर्म और कर्तव्यपालन, निष्काम कर्म योग, संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान*

परिचय

विदेश नीति किसी भी राष्ट्र के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति का आधार होती है। यह नीति राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक शांति, सहयोग और स्थिरता के लिए प्रयासरत रहती है। भारतीय विदेश नीति का इतिहास, दर्शन और व्यवहारिकता भारतीय सभ्यता और सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ है। इन मूल्यों में से सबसे महत्वपूर्ण प्रेरणा का स्रोत श्रीमद्भागवत गीता है।गीता, जो न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है बल्कि जीवन और शासन के यथार्थवादी सिद्धांतों का संग्रह है, भारतीय विदेश नीति के लिए नैतिक मार्गदर्शन का कार्य करती है। इसके शाश्वत उपदेश जैसे धर्म का पालन, निष्काम कर्म, वसुधैव कुटुंबकम् और संकट प्रबंधन, भारतीय कूटनीति के सिद्धांतों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। भारत ने गीता के सिद्धांतों का पालन करते हुए अपनी विदेश नीति में शांति, संयम और सहयोग को प्राथमिकता दी है। साथ ही, संकट के समय विवेकपूर्ण और निर्णायक निर्णय लेकर गीता के न्याय और धर्म के सिद्धांतों का पालन किया है। यह

ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

शोध पत्र गीता और भारतीय विदेश नीति के बीच संबंधों का अध्ययन कर उन मूल सिद्धांतों को उजागर करता है, जो भारत को वैश्विक मंच पर नैतिक नेतृत्व प्रदान करते हैं।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया। गीता के मूल श्लोकों का विश्लेषण करते हुए उनके विदेश नीति पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त, ऐतिहासिक और समकालीन घटनाओं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया।

गीता और भारतीय विदेश नीतिरू :एक विश्लेषण

धर्म और कर्तव्यपालन

"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" (गीता 3.35)

श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है कि अपने धर्म (कर्तव्य) का पालन करते हुए मृत्यु भी श्रेष्ठ है, पराये धर्म का पालन भय उत्पन्न करता है। इस श्लोक से समझ आता है कि किसी भी राष्ट्र को अपने कर्तव्य और नैतिकता का हमेशा पालन करना चाहिए।इसी तरह भारतीय विदेश नीति अपने सिद्धांतों पर अडिग है। भारतीय विदेश नीति का प्रमुख सिद्धांत विश्व शांति स्थापित करना रहा है और हमेशा इसी का पालन करता हैं। भारत ने आजतक किसी देश पर हमला नहीं किया। उसने सब उपायो का प्रयोग करके आख़िर में युद्ध का रास्ता चुनता है। भारत ने विश्व शांति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा 50 से अधिक शांति अभियानों में हिस्सा लिया है। इसके अलावा समय समय पर अपने पड़ोसी देशों की सहायता की ।

निष्काम कर्म योग

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि"॥ (गीता 2.47)

गीता में कहा गया है कि निष्काम कर्म करना चाहिए। उसे बिना लालच के कामकाज करना चाहिए। तुम्हें फल की चिंता नहीं करनी चाहिए।इसी तरह भारतीय विदेश नीति स्वार्थ रहित है। भारत कभी अपने स्वार्थ के लिए दुसरे देशों को तंग नहीं करता। जरुरत पड़ने पर भारत ने हमेशा अपने पड़ोसी, कमजोर देशों की सहायता की है। उसके मन में बदलें में कुछ लेने की भावना नहीं रहीं हैं। भारत ने पाकिस्तान के साथ वर्ष 1971 में युद्ध किया जिसमें पाकिस्तान के 92 हज़ार सिपाही बंदी बना लिये। भारत चाहता तो पाकिस्तान पर दबाव बना सकता था।पर भारत ने बिना

किसी शर्त उन्हें रिहा किया। इसके अलावा भारत ने करोना महामारी में दुसरे देशों की मदद किया। भारत ने 122 देशों के सौर ऊर्जा गठबंधन का नेतृत्व किया। यह कार्य बिना स्वार्थ थे बिना फल के चिंता किए।

वसुधैव कुटुंबकम्

"समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।

ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्"॥ (गीता 9.29)

गीता में कहा गया है कि मैं सभी प्राणियों के लिए समान हूं; न कोई मेरा शत्रु है, न कोई प्रिय। जो मुझे भक्ति से पूजते हैं, मैं उनके साथ हूं। यह सिद्धांत वसुधैव कुटुंबकम् पर आधारित है। भारत अपनी विदेश नीति में वसुधैव कुटुम्ब का अनुसरण करता है उदाहरण के तौर पर भारत ने स्वतंत्रता के बाद ही सबसे पहले गुटनिरपेक्षता नीति का पालन किया। भारत ने बिना किसी गुटबाजी में शामिल हुए विकासशील देशों के साथ गुट निरपेक्ष रहने का निर्णय लिया। यह क़दम सभी देशों की भलाई के लिए था। सभी विश्व को साथ लेकर चलना था। इसके अलावा भारत ने करोना महामारी में वैक्सीन मैत्री के द्वारा 100 से अधिक देशों को कोरोना वैक्सीन प्रदान की। यह गीता के सिद्धांत ष्सर्वभूत हिते रतःष (सभी जीवों के कल्याण में संलग्न रहना) का उदाहरण है।

शांति और संतुलन

"युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥" (गीता 6.17)

इस श्लोक का अर्थ है कि जो व्यक्ति संतुलित आहार, व्यवहार, और कार्य करता है, वह दुखों से मुक्त हो जाता है।इसी तरह भारतीय विदेश नीति में यह संयम ओर संतुलन का संदेश दिखाईं देता है । भारत हमेशा संयम रखता है कोई फैसला लेने में और हमेशा शांति के पक्षधर रहा है।भारत अपने पड़ोसी देशों का हमेशा सहयोग देता है जो इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। भारत द्वारा चीन के साथ वर्ष 1954 में पंचशील सिद्धांत पर सहमति जताई ओर पालन किया। परंतु चीन द्वारा भारत पर हमला करके इसका उलंघन किया पर भारत ने ऐसा कभी नहीं किया। भारत विश्व में परमाणु संपन्न राष्ट्रों की सूची में आता है पर फिर भी यह हमेशा पहले ना प्रयोग की परमाणु नीति को अपनाया है। यह शांति स्थापित करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है।

संकट प्रबंधन और निर्णय क्षमता

ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

"व्यवसायात्मिका बुद्धिः एकेह कुरुनन्दन।

बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्"॥(गीता 2.41)

श्रीमद्भागवत गीता में इस श्लोक का अर्थ है कि जो दृढ़ निश्चय वाला है, उसकी बुद्धि एक बिंदु पर केंद्रित होती है; जबकि संकल्पहीन के विचार अनेक शाखाओं में बंटे होते हैं। इसी तरह भारत ने हमेशा संकट के समय एकाग्रता और विवेक से निर्णय लिया है। उदाहरण स्वरुप वर्ष 1971 में जब पाकिस्तान बंगलादेश पर मानवीय अत्याचार कर रहा था तो भारत ने बांग्लादेश की मुक्ति वाहिनी सेना का साथ देकर पाकिस्तान से युद्ध किया और पाकिस्तान के दो धड़ों में बांट दिया। यह कार्य तुरंत और विवेक पूर्ण था। यह न्याय के लिए युद्ध किया था जो गीता के न्याय सिद्धांत अनुरुप था। वर्ष 2017 में जब चीन और भूटान के बीच डोकलाम विवाद हुआ तो भारत ने चीन की मनमानी के विरुद्ध भूटान का साथ दिया। यह गीता के " साहस और धैर्य" सिद्धांत के अनुरूप था।

युद्ध और शांति का संतुलन

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्"॥ (गीता 4.7)

श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है कि जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब मैं स्वयं की सृष्टि करता हूं।। भारत इस सिद्धांत पर अडिग है। जब जब किसे राष्ट्र के साथ अन्याय हुआ है भारत उस देश कि मददगार साबित हुआ है। वर्ष 1971 में बंगलादेश कि सहायता करना आदि।

नेतृत्व और प्रेरणा

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ (गीता 3.21)

श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है कि श्रेष्ठ व्यक्ति जैसा आचरण करता है, अन्य लोग उसका अनुसरण करते हैं। भारत ने हमेशा अपने न्यायोचित एवं नैतिकता से हर राष्ट्र को प्रेरित किया है। उदाहरण के तौर पर भारत ने वर्ष 2021में हुएं ब्व्ब्26 में दुनिया को सतत विकास के लिए प्रेरित किया और खुद ने इस पर अमल किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग को मान्यता दिलवाना यह सब गीता के नेतृत्व एवं प्रेरणा सिद्धांत से प्रेरित है।

सामरिक दृष्टिकोण

"शत्रुं मित्रं समं तीर्त्वा स्वयं कार्यम आरभेत्"। (गीता का व्याख्यात्मक संदर्भ)

श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है कि शत्रु और मित्र दोनों के साथ समान व्यवहार रखते हुए अपने उद्देश्य को पूरा करें। भारत ने हमेशा इस का विदेश नीति में पालन की । विश्व मंचों पर भारत ने हमेशा हर राष्ट्र से समान व्यवहार किया है चाहें पाकिस्तान हो या अमेरिका। हमेशा भारत सकारत्मक सोच के साथ आगे बढ़ता है।

निष्कर्ष

अतः में हम कह सकते हैं कि श्रीमद्भागवत गीता भारतीय विदेश नीति के लिए एक नैतिक और व्यवहारिक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करती है। गीता के सिद्धांत भारत की विदेश नीति को यथार्थवादी और नैतिक आधार प्रदान करते हैं। यह शोध पत्र दर्शाता है कि भारतीय विदेश नीति का उद्देश्य केवल राष्ट्रीय हित तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक कल्याण, सहयोग, और शांति को बढ़ावा देना भी है। भारत हमेशा से राष्ट्र धर्म का पालन करता आया है। हर भारतीय नैतिकता और शांति के लिए प्रतिबद्ध है।

संदर्भ

1. पंत एच. वी. भारतीय विदेश नीतिरू एक पाठक. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019.

2. बसु आर. "भारत की विदेश नीतिरू गीता का संबंध." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस रिसर्च, खंड 4, अंक 5, 2016, पृ. 12द्20.

3. मालोन डी. एम. क्या हाथी नृत्य करता है? समकालीन भारतीय विदेश नीति. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011.

4. विदेश मंत्रालय. "संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में भारत का योगदान." MEA] 2021] www-mea-gov-in-

5. शुक्ला ए. "आधुनिक कूटनीति में भगवद्गीता की प्रासंगिकता." भारतीय दर्शन जर्नल, खंड 48, अंक 3, 2020, पृ. 145द्160.

6. स्वामी प्रभुपाद. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप (स्वामी प्रभुपाद द्वारा अनुवादित). भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, 1986.